

विषय-७
बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएँ

चौदहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक यूरोप के अनेक देशों में नगरों की संख्या बढ़ रही थी। एक विशेष प्रकार की “नगरीय-संस्कृति” विकसित हो रही थी। फ्लोरेंस, वेनिस और रोम-कला और विद्या के केन्द्र बन गए। मुद्रण के आविष्कार से अनेक लोगों को छपी हुई पुस्तकें उपलब्ध होने लगीं। यूरोप में इतिहास की समझ विकसित होने लगी।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अपना धर्म चुन सकता है। चर्च के पृथ्वी के केंद्र संबंधी विश्वासों को वैज्ञानिकों ने गलत सिद्ध कर दिया।

इटली के नगरों का पुनरुत्थान :

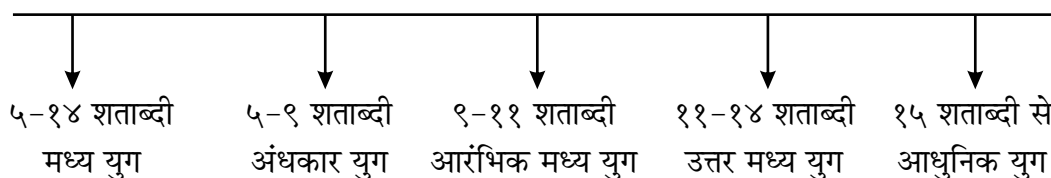
पश्चिमी यूरोप के क्षेत्र, सामंती संबंधों के कारण नया रूप ले रहे थे और लातिनी चर्च के नेतृत्व में उनका एकीकरण हो रहा था। बाइजेंटाइन साम्राज्य और इस्लामी देशों के बीच व्यापारके बढ़ने से इटली के तटवर्ती बंदरगाह पुनर्जीवित हो गए

वेनिस और जिनेवा सर्वाधिक जीवंत शहरों में थे। धनी व्यापारी और महाजन नगर के शासन में सक्रिय रूप से भाग लेते थे।

विश्वविद्यालय और मानवतावाद :

ग्यारहवीं शताब्दी से पादुआ और बोलोनिया विश्वविद्यालय विधिशास्त्र के अध्ययन केंद्र रहे। वकीलों और नोटरी की अधिक आवश्यकता होती थी। पंद्रहवीं शताब्दी में “मानवतावादी” शब्द उन अध्यापकों के लिए प्रयुक्त होता था जो व्याकरण अलंकारशास्त्र कविता, इतिहास और नीतिदर्शन विषय पढ़ाते थे। लातिनी शब्द “ह्यूमैनिटस” से “ह्यूमेनिटज” शब्द बना है। “रनेसाँ व्यक्ति” शब्द का प्रयोग प्रायः उस मनुष्य के लिए किया जाता है जिसकी अनेक रुचियाँ हों और अनेक हुनर में उसे महारथ प्राप्त हो।

मानवतावादियों द्वारा प्रयुक्त कालक्रम



विज्ञान और दर्शन :

चौदहवीं शताब्दी में अनेक विद्वानों ने प्लेटो और अरस्तू के ग्रंथों से अनुवादों को पढ़ना शुरू किया। ये ग्रंथ प्राकृतिक विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान, औषधि विज्ञान और रसायन विज्ञान से संबंधित थे। मुसलमान लेखकों में इब्न-सिना और अल-राजी सम्मिलित थे। मानवतावादी विषय स्कूलों में पढ़ाये जाने लगे।

कलाकार और यथार्थवाद :

रेखागणित के ज्ञान से चित्रकार अपने परिदृश्य को ठीक तरह से समझ सकते थे। प्रकाश के बदलते गुणों का अध्ययन करने से उनके चित्रों में त्रिआयामी रूप दिया जा सकता था। शरीर विज्ञान, रेखागणित, भौतिकी और सौंदर्य की उत्कृष्ट भावनाओं ने इतालवी कला को नया रूप दिया जिसे बाद में “यथार्थवाद” कहा गया।

स्त्रीत : ‘दि पाइटा’ चित्र, माइकल एन्जिलो के द्वारा, फूलेरेंस के कथीड्रल, टॉलेमी का अलमजेस्ट मैकियावेली के दि प्रिंस, बाल्थासार कास्टिल्योनी के दि कोर्टियर

काल रेखा :

चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दियाँ— संदर्भ-पाठ्य पुस्तक पृ० सं० १५५

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों— संदर्भ- पाठ्य पुस्तक पृ० सं० १६५

विशेष शब्द :

मानवतावाद

लातिनी शब्द ‘ह्यूमेनिटास’ जिससे “ह्यूमेनिटिज” शब्द बना है जिसे कई शताब्दियों पहले रोम के व्कील तथा निबंधकार सिसरो ने “संस्कृति” के अर्थ में लिया था। ये विषय धार्मिक नहीं थे।

न्यू टेस्टामेंट :

न्यू टेस्टामेंट बाइबल का वह खंड है जिसमें ईसा मसीह का जीवन-चरित्र, धर्मोदेश और प्रारंभिक अनुयायियों का उल्लेख है।

“रेनेसों व्यक्ति”:

“रेनेसों व्यक्ति” शब्द का प्रयोग प्रायः उस मनुष्य के लिए किया जाता है जिसकी अनेक रुचियों हो और उनेक हनुर में से महारथ प्राप्त हो।

आदर्श प्रश्न

२ अंक वाले प्रश्न

१। “मानवतावाद” क्या है ?

२। “रेनेसों व्यक्ति” से आप क्या समझते हैं ?

- ३। इस समय के दो मुसलमान लेखकों के नाम लिखिए।
- ४। “यथार्थवाद” से आप क्या समझते हैं।
- ५। मार्टिन लूथर कौन था ?

५ अंक वाले प्रश्न

- १। मनुष्य की एक नयी संकल्पना के बारे में लिखिए।
- २। इस समय की वास्तुकला का वर्णन कीजिए।
- ३। विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में अरबों का क्या योगदान था ?
- ४। इटली के नगरों का पुनरुत्थान कैसे हुआ ?
- ५। नगर-राज्य के बारे में लिखिए।

१० अंक वाले प्रश्न

- १। इस समय ईसाई धर्म के अंतर्गत क्या क्या परिवर्तन हुए।
- २। “कोपरनिकसीय क्रांति” का मैं वर्णन कीजिए।
- ३। चौदहवीं सदी में क्या यूरोप में “पुनर्जागरण” हुआ था ?

आदर्श उत्तर

२ अंक वाले प्रश्न

- १। “रेनेसों व्यक्ति” से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर: “रेनेसों व्यक्ति” शब्द का प्रयोग प्रायः उस मनुष्य के लिए किया जाता है जिसकी अनेक रुचियाँ हों और अनेक हुनर में उसे महारथ प्राप्त हो।

५ अंक वाले प्रश्न

- १। विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में अरबों का क्या योगदान था।

उत्तर: क) चौदहवीं शताब्दी में अनेक विद्वानों ने प्लेटो और अरस्तू के ग्रंथों से अनुवादों को पढ़ना शुरू किया।

ख) यूनानी विद्वान अरबी और फारसी विद्वानों की कृतियों को अन्य यूरोपीय लोगों के बीच प्रसार के लिए अनुवाद किए।

ग) ये ग्रंथ प्राकृतिक विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान, औषधि विज्ञान और रसायन विज्ञान से संबंधित थे।

घ) मुसलमान लेखकों, जिन्हें इतालवी दुनिया में ज्ञानी माना जाता था, में इब्न-सिना और अल-राजी सम्मिलित थे।

ङ) मानवतावादी विषय स्कूलों में पढ़ाये जाने लगे।

१० अंक वाले प्रश्न

१। इस समय ईसाई धर्म के अंतर्गत क्या-क्या परिवर्तन हुए।

- उत्तर: क) व्यापार और सरकार, सैनिक विजय और कूटनीतिक संपर्कों के कारण इटली के नगरों के दूर-दूर के देशों से संपर्क स्थापित हुए।
 ख) टॉमस मोर और इरेस्मस का यह मानना था कि चर्च एक लालची संस्था है।
 ग) “पाप-स्वीकारोक्ति” नामक दस्तावेज की विक्री।
 घ) किसानों ने चर्च द्वारा लगाए गए करों का विरोध किया।
 ङ) मार्टिन-लूथर ने कैथलिक चर्च के विरुद्ध अभियान छेड़ा।
 च) मनुष्य को ईश्वर से संपर्क साधने के लिए पादरी की आवश्यकता नहीं है।
 छ) प्रोटेस्टेंट सुधारवाद के कारण चर्च ने पोप तथा कैथलिक चर्च से अपने संबंध समाप्त कर दिए।
 ज) लूथर के विचारों को उलरिक ज्विंगली और कैल्विन ने काफी लोकप्रिय बनाया।
 झ) जर्मन सुधारक एनाबेप्टिस्ट मोक्ष के विचार को हर तरह के सामाजिक-उत्पीड़न के अंत होने के साथ जोड़ दिया।
 ञ) लूथर ने आमूल परिवर्तनवाद का समर्थन नहीं किया।

उद्धरण आधारित प्रश्न

नगर-राज्य

कार्डिनल गेसपारो अधिकार मिलता चाहिए।

- १। कार्डिनल गेसपारो कोन्तारिनी के द्वारा लिखी गई पुस्तक का नाम क्या है ? २
 उत्तर: दि कोमनवेल्थ एण्ड गवर्नमेंट ऑफ वेनिस
 २। कोन्तारिनी की पुस्तक की विषय-वस्तु क्या है। २
 उत्तर: लोकतांत्रिक सरकार के बारे में लिखा है।
 ३। परिषद में किनको रखा गया था ? २
 उत्तर: २५ वर्ष से अधिक आयु वाले संप्रदाय वर्ग के सभी पुरुषों को सदस्यता मिली थी।
 ४। कौन प्रायः निर्धन हो जाते थे ? २
 उत्तर: सचचरित्र नागरिक जिनका लालन-पालन उदार वातावरण में होता था, वे प्रायः निर्धन हो जाते थे।

